समकालीन साहित्य: विविध परिप्रेक्ष्य

हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

15-03-2023

महाविद्यालय सभागार

समकालीन साहित्य को अलग अलग रूप से पढ़ें : मदन कश्यप

राजकीय महाविद्यालय संजौली में बुधवार को आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में उपस्थित कवि, आलोचक व शोधकर्ता ● जागरण

जागरण संवाददाता, शिमला : उत्कृष्ट शिक्षा केंद्र राजकीय महाविद्यालय संजौली में हिंदी और भाषा एवं संस्कृति विभाग के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें देश व प्रदेश के विद्वानों, प्राध्यापकों व शोधकर्ताओं ने विचार रखे।

दिल्ली से आए कवि और आलोचक मदन कश्यप ने कहा कि समकालीन साहित्य को अलग-अलग रूप से पढ़ना चाहिए। बिहार से आए डा. अंजनी कुमार श्रीवास्तव ने साहित्य में उपजे विभिन्न आंदोलनों के प्रभाव का विश्लेषण किया। मुख्य अतिथि डा. पंकज ललित ने विभाग की सराहना की। दूसरे सत्र में डा. बलदेव शर्मा, डा. पान सिंह व डा. हेमराज कौशिक ने समकालीन साहित्य की विविधता को स्पष्ट किया और लिखे जा रहे साहित्य का विश्लेषण किया। तीसरे सत्र की अध्यक्षता डा. कुंवर दिनेश व डा. राजेंद्र वर्मा ने की। डा. प्रियंका भारद्वाज, देवकन्या ठाकर, डा. दिनेश शर्मा, डा. देवेंद्र शर्मा, डा. प्रकाश चंद, डा. राजन तंवर, रचना तंवर, अंजना ठाकुर, मुकेश कुमार, शिल्पा ठाकुर, मनीषा कुमारी, कन्याकुमारी, कल्पना ने व्याख्यान दिया। समापन सत्र में श्रीनिवास जोशी ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का साहित्य पर संकट पर व्याख्यान दिया। डा. सत्यनारायण स्नेही ने कहा कि जिस उद्देश्य से समकालीन साहित्य का आयोजन किया गया था उसमें काफी हद तक सफलता मिली है। संगोष्ठी का संचालन डा. कामायनी बिष्ट व डा. बबीता ठाकुर ने किया। इस अवसर पर कथाकार एसआर हरनोट, मोहन साहिल, ओमप्रकाश शर्मा, स्नेह नेगी, प्राध्यापक आदि मौजूद रहे। भाषा एवं संस्कृति विभाग के सचिव एकरा कंवर ने कहा कि साहित्य मनुष्य की मनोवृत्ति को परिष्कृत करता है। उन्होंने संजौली महाविद्यालय के प्राध्यापकों को बधाई दी। प्राचार्य डा. सीमी मेहता ने अतिथियों का स्वागत किया।

Scanned with ACE Scanner

समकालीन साहित्य को पढ़ने की जरूरत : कश्यप

संजौली कॉलेज में साहित्य पर संगोष्ठी शुरु, भाषा विभाग के सचिव ने किया संचालन

अमर उजाला ब्यूरो

शिमला। राजकीय महाविद्यालय संजौली के हिंदी विभाग ने भाषा एवं संस्कृति विभाग के सहयोग से बुधवार को समकालीन साहित्य पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी में देश के अलग राज्यों के साथ प्रदेशभर से आए विद्वानों, शोधकर्ताओं ने समकालीन साहित्य : विविध परिपेक्ष्य पर विचार रखे। संगोष्ठी का शुभारंभ भाषा एवं संस्कृति विभाग के निदेशक डॉ. पंकज ललित ने किया।

दिल्ली से आए समकालीन कवि और आलोचक मदन कश्यप ने कहा कि समकालीन साहित्य को सन 70 से 90 और 1990 से आज तक अलग-अलग रूप से पढ़ा जाना चाहिए। बिहार से आए डॉ. अंजनी कुमार श्रीवास्तव ने 60 वर्षों में अनेक विमर्श को स्पष्ट किया और साहित्य में उपजे विभिन्न आंदोलनों के प्रभाव का विश्लेषण किया।

दूसरे सत्र में डॉ. बलदेव शर्मा, डॉ. पान सिंह और डॉ. हेमराज कौशिक ने समकालीन साहित्य की विविधता को स्पष्ट किया तथा आज लिखे जा रहे साहित्य का विश्लेषण किया। संगोष्ठी के तीसरे सत्र में प्राध्यापकों और शोधकर्ताओं के पत्र वाचन पर आधारित रहा। इसकी अध्यक्षता डॉ कुंवर दिनेश सिंह और डॉ. राजेंद्र वर्मा ने की।

सत्र में प्रतिभागियों में डॉ. प्रियंका भारद्वाज, देवकन्या ठाकुर, डॉ. दिनेश शर्मा, डॉ. देवेंद्र शर्मा, डॉ. प्रकाश चंद, डॉ. राजन तंवर रचना तंवर, अंजना ठाकुर, मुकेश कुमार, शिल्पा ठाकुर, मनीषा कुमारी कन्याकुमारी और कल्पना के साथ ही शोधकर्ताओं ने पत्र वाचन किया।

समापन सत्र में सेवानिवृत्त आईएएस श्रीनिवास जोशी ने मुख्य वक्ता ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का साहित्य पर संकट विषय को लेकर विश्लेषणात्मक व्याख्यान प्रस्तुत किया।

भाषा एवं संस्कृति विभाग के सचिव राकेश कंवर ने इसका संचालन किया। इस मौके पर कॉलेज प्राचार्य डॉ. सीबो मेहता, संगोष्ठी के संयोजक डॉ. सत्यनारायण स्नेही, डॉ. कामायनी बिष्ट, डॉ. बबीता ठाकुर, एसआर हरनोट, मोहन साहिल, ओम प्रकाश शर्मा, स्नेह नेगी और शिक्षक मौजूद रहे।

अमर उजाला

उत्कृष्ट शिक्षा केंद्र संजौली में राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित

वरिष्ठ संवाददाता ■ शिमला

उत्कृष्ट शिक्षा केंद्र राजकीय महाविद्यालय संजौली में हिंदी विभाग और भाषा एवं संस्कृति विभाग के संयुक्त तत्वावधान में समकालीन साहित्य विविध परिप्रेक्ष्य को लेकर के राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें देश और प्रदेश के विद्वानों, प्राध्यापकों और शोधकर्ताओं ने अपने अपने विचार रखे और संगोष्ठी के विषय को अपने अनुभव और ज्ञान के हिसाब से परिभाषित किया।

दिल्ली से आए समकालीन कवि और आलोचक मदन कश्यप ने कहा कि समकालीन साहित्य को 1970 से 1990 और 1990 से आज तक अलग-अलग रूप से पढ़ा जाना चाहिए। इसके अलग-अलग परिप्रेक्ष्य है, उनके अनुसार साहित्य समाज का स्वरूप जो प्रस्तुत करता है जैसा समाज में घटित होता है। बिहार से आए डॉ. अंजनी कुमार श्रीवास्तव ने पिछले 60 वर्षों में अनेक विमर्श को स्पष्ट किया और साहित्य में उपजे विभिन्न आंदोलनों के प्रभाव का विश्लेषण किया। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि डॉ. पंकज ललित ने कहा कि संगोष्ठी के आयोजन की सराहना की व विभाग के योगदान पर प्रकाश डाला। दूसरे सत्र में डॉ. बलदेव शर्मा, डॉ. पान सिंह और डॉ. हेमराज कौशिक ने समकालीन साहित्य की विविधता को स्पष्ट किया और आज लिखे जा रहे साहित्य का व्यापक फलक पर विश्लेषण किया। इस संगोष्ठी का तीसरा सत्र प्राध्यापकों और शोधकर्ताओं के पत्र वाचन पर आधारित रहा, जिसकी अध्यक्षता डॉ. कुंवर दिनेश और डॉ. राजेंद्र वर्मा ने की। प्रतिभागियों में डॉ. प्रियंका भारद्वाज, देवकन्या ठाकुर, डॉ. दिनेश शर्मा, डॉ. देवेंद्र शर्मा, डॉ. प्रकाश चंद, डॉ. राजन तंवर, रचना तंवर, अंजना ठाकुर, मुकेश कुमार, शिल्पा ठाकुर, मनीषा कुमारी, कन्याकुमारी व कल्पना सहित अनेक शोधकर्ताओं ने विविध विषयों पर पत्र वाचन किया।

हिमाचल दस्तक

संजौली में साहित्य के संकट पर मंथन

समकालीन साहित्य विविध परिप्रेक्ष्य पर राष्ट्रीय संगोष्ठी, देश-प्रदेश के विद्वानों ने रखे विचार

स्टाफ रिपोर्टर—शिमला

उत्कृष्ट शिक्षा महाविद्यालय संजौली में हिंदी विभाग और भाषा एवं संस्कृति विभाग के संयुक्त तत्वावधान में समकालीन साहित्य विविध परिप्रेक्ष्य को लेकर के राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें देश और प्रदेश के विद्वानों, प्राध्यापकों और शोधकर्ताओं ने अपने अपने विचार रखें। दिल्ली से आए समकालीन कवि और आलोचक मदन कश्यप ने कहा कि समकालीन साहित्य को सन 70 से 90 और 1990 से आज तक अलग-अलग रूप से पढ़ा जाना चाहिए और इसके अलग-अलग परिप्रेक्ष्य है उनके अनुसार साहित्य समाज का स्वरूप जो प्रस्तुत करता है जैसा समाज में घटित होता है। बिहार से आए डॉक्टर अंजनी कुमार श्रीवास्तव ने पिछले 60 वर्षों में अनेक विमर्श को स्पष्ट किया और साहित्य में उपजे विभिन्न आंदोलनों के प्रभाव का विश्लेषण किया।

उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि डॉ पंकज ललित ने आयोजन की सराहना की। साथ ही विभाग के योगदान पर प्रकाश डाला। दूसरे सत्र में डॉ बलदेव शर्मा, डॉ पान सिंह और डॉ हेमराज कौशिक ने समकालीन साहित्य की विविधता को स्पष्ट किया। इस संगोष्ठी का तीसरा सत्र प्राध्यापकों और शोधकर्ताओं के पत्र वाचन पर आधारित रहा। जिसकी अध्यक्षता डॉ कुवर दिनेश और डॉ राजेंद्र वर्मा ने की प्रतिभागियों में डॉ प्रियंका भारद्वाज, देवकन्या ठाकुर डॉ दिनेश शर्मा डॉ देवेंद्र शर्मा, डॉ प्रकाश चंद, डॉ राजन तंवर रचना तंवर, अंजना ठाकुर, मुकेश कुमार, शिल्पा ठाकुर, मनीषा कुमारी कन्याकुमारी कल्पना इत्यादि अनेक शोधकर्ताओं ने विविध विषयों पर पत्र वाचन किया।

समापन सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में श्रीनिवास जोशी ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का साहित्य पर संकट को लेकर के विश्लेषणात्मक व्याख्यान प्रस्तुत किया और मुख्य अतिथि सचिव भाषण संस्कृति विभाग राकेश कंवर ने कहा कि साहित्य मनुष्य को मनोवृत्ति को परिष्कृत करता है और साहित्य पढ़ने और उस पर चर्चा करने से मनुष्य जीवन की बहुत सारी अनसुलझी गुत्थियां चिंताओं और चेतना उनको स्पष्ट करने का अवसर मिलता है संजौली महाविद्यालय जैसे आयोजन के लिए बधाई का पात्र है महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ सी बो मेहता ने सभी अतिथियों का स्वागत एवं अभिनंदन किया। इस संगोष्ठी के संयोजक डॉ सत्यनारायण स्नेही ने संगोष्ठी के निहित मंतव्य को स्पष्ट किया। 4 सत्रों में चली इस संगोष्ठी का सफल संचालन डॉ कामायनी बिष्ट और डॉ बबीता ठाकुर ने किया।

दिव्य हिमाचल

Scanned with ACE Scanner

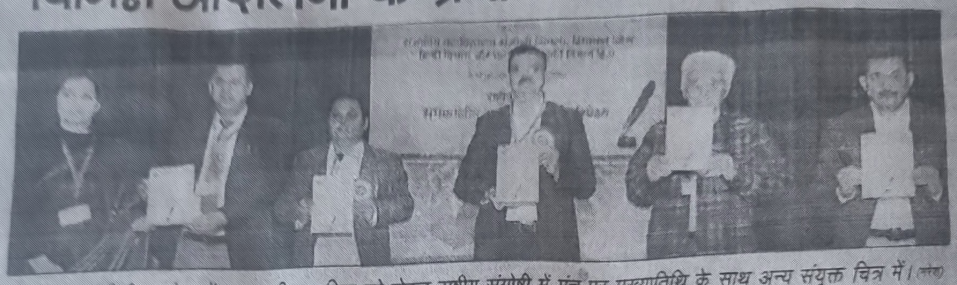

संजौली में संगोष्ठी के दौरान साहित्य में उपजे विभिन्न आंदोलनों के प्रभाव का किया विश्लेषण

शिमला : संजौली कालेज में समकालीन साहित्य को लेकर राष्ट्रीय संगोष्ठी में मंच पर मुख्यातिथि के साथ अन्य संयुक्त चित्र में। (छाया)

शिमला, 15 मार्च (अम्बादत): उत्कृष्ट शिक्षा केंद्र राजकीय महाविद्यालय संजौली में हिंदी विभाग और भाषा एवं संस्कृति विभाग के संयुक्त तत्वावधान में समकालीन साहित्य को लेकर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें देश और प्रदेश के विद्वानों, प्राध्यापकों और शोधकर्त्ताओं ने अपने विचार रखे और संगोष्ठी के विषय को अपने अनुभव और ज्ञान के हिसाब से परिभाषित किया।

दिल्ली से आए समकालीन कवि और आलोचक मदन कश्यप ने कहा कि समकालीन साहित्य को सन 70 से 90 और 1990 से आज तक अलग-अलग रूप से पढ़ा जाना चाहिए और इसके अलग-

समाज का स्वरूप जो प्रस्तुत करता है जैसा समाज में घटित होता है।

बिहार से आए डाक्टर अंजनी कुमार श्रीवास्तव ने पिछले 60 वर्षों में अनेक विमर्श को स्पष्ट किया और साहित्य में उपजे विभिन्न आंदोलनों के प्रभाव का विश्लेषण किया।

उद्घाटन सत्र में मुख्यातिथि डा. पंकज ललित ने संगोष्ठी के आयोजन की सराहना की तथा विभाग के योगदान पर प्रकाश डाला। दूसरे सत्र में डा. बलदेव शर्मा, डा. पान सिंह और डा. हेमराज कौशिक ने समकालीन साहित्य की विविधता को स्पष्ट किया तथा आज लिखे जा रहे साहित्य का व्यापक प्रलक पर विश्लेषण किया।

सत्यनारायण स्नेही ने संगोष्ठी के निहित मंतव्य को स्पष्ट किया और कहा कि समकालीन साहित्य को आधार मानकर जिस उद्देश्य से इस साहित्य का अनुष्ठान का आयोजन किया गया था उसमें बहुत हद तक सफलता प्राप्त हुई है और देश और प्रदेश के आधिकारिक विद्वानों और शताधिक प्रतिभागियों ने अपने विचारों से समकालीन साहित्य के विविध विमर्शों को स्पष्ट किया है।

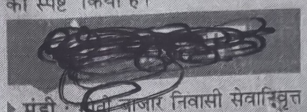

[redacted]

▶ मंडी : [redacted] बाजार निवासी सेवानिवृत्त शिक्षिका इंदिरा पुरी (66) का बुधवार सुबह ...

पंजाब केसरी

उत्कृष्ट शिक्षा केन्द्र में राष्ट्रीय संगोष्टी आयोजित

शिमला | उत्कृष्ट शिक्षा केंद्र राजकीय महाविद्यालय संजौली में भाषा व संस्कृति विभाग के संयुक्त तत्वावधान से राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया।

जिसमें देश और प्रदेश के विद्वानों, प्राध्यापकों और शोधकर्ताओं ने अपने अपने विचार रखें। दिल्ली से आए मदन कश्यप ने कहा कि समकालीन साहित्य को सन 70 से 90 और 1990 से आज तक अलग-अलग रूप से पढ़ा जाना चाहिए। बिहार से आए डॉ. अंजनी श्रीवास्तव ने पिछले 60 वर्षों में कई विमर्श को स्पष्ट किया और साहित्य में उपजे विभिन्न आंदोलनों के प्रभाव का विश्लेषण किया। उद्घाटन सत्र में मुख्यातिथि डॉ. पंकज ललित ने कहा संगोष्ठी आयोजन की सराहना करते हुए विभाग के योगदान पर प्रकाश डाला। दूसरे सत्र में डॉ. बलदेव शर्मा, डॉ. पान सिंह और डॉ. हेमराज कौशिक ने समकालीन साहित्य की विविधता को स्पष्ट किया और लिखे जा रहे साहित्य का व्यापक प्रलक पर विश्लेषण किया।

दैनिक भास्कर

Scanned with ACE Scanner

Scanned with ACE Scanner

विभागाध्यक्ष

12.3.2023

Scanned with ACE Scanner